अमृत छोड़ विष क्यों पिये
जीवन है अनमोल जीने की लये
विकारों को त्याग तो ही जिये
आत्मा की मैल मिटा शुद्ध बनाने लिये
विषय सागर में क्यों लगायें गोते
शिव सागर आये जब ज्ञान गंगा लिये
काम-क्रोध की अग्नि में क्यों जल रहे
शिव आये जब शांति का वर्सा लिये
दुःख, संताप ,शोक क्यों करे
सुख के दिन जब आये की आये
धर्म की बहुत हो रही ग्लानि
सत धर्म की स्थापना अर्थ शिव धरा पर आ लिए
सुख समृद्धि का राज्य स्वर्ग हाथ में लिये
चिंता करते अब किसके लिये
विनाशी है सब मिट्टी में मिल जाये
अविनाशी ज्ञान रत्न ही साथ जाना लिये
आया पिता सतशिक्षक बन दीक्षा दिये
सतगुरु बन मुक्ति-जीवनमुक्ति देने आये
कर हिसाब-किताब पूरा अपना दिन अब नही रहे
पूरा हुआ काल का चक्र होने वाली अब भोर
मत सो अब अज्ञान नींद में ज्ञान सूर्य है प्रगट हुए
ज्ञान अमृत पी कर हो जा सुरजीत

मनमनाभव का मन्त्र धारण किये
पवित्र बन, पवित्र दुनिया में जाने लिये

ॐशांति

--
Sent from Fast notepad